Guru Jambheshwar University of Science & technology Hisar.
In news In September 2015

सॉफ्टवेयर पकड़ेगा शोध कार्यों में नकल का खेल

जीजेयू के पास आया नया सॉफ्टवेयर, रिसर्च पेपर की होगी जांच

अमर उजाला ब्यूरो

हिसार। पीएचडी स्कॉलरों के शोध कार्यों में नकल का पुलिंदा अब नहीं चलेगा। जीजेयू प्रशासन ने यूजीसी की बॉडी इनफ्लीड नेट के साथ एमओयू साइन किया है। इसके तहत विश्वविद्यालय को मुफ्त में सॉफ्टवेयर मुहैया करवाया गया है। सॉफ्टवेयर के माध्यम से थीसिस की जांच की जाएगी और पता लगाया जाएगा कि किसकी थीसिस या किताब से नकल कर शोध कार्य किया गया है। इसी सॉफ्टवेयर के जरिए ही शोधार्थियों की थीसिस को फाइल किया जाएगा। दरअसल विवि प्रशासन के पास शोध कार्यों की गुणवत्ता और नकल करके शोध कार्य करने की लगातार शिकायतें आ रही हैं। इसके अलावा कई सीनियर शिक्षकों की ओर से शोध कार्यों में शोधार्थियों द्वारा मेहनत नहीं किए जाने को लेकर चिंता जताई थी। इसके बाद विवि प्रशासन ने यह निर्णय है। इस कवायद के बाद शोध कार्यों में गुणवत्ता बढ़ने की उम्मीद बंधी है।

हर साल करते हैं 150 से ज्यादा छात्र पीएचडी

यह रहेगी परेशानी : जीजेयू में सॉफ्टवेयर को लेकर जांच की जा चुकी है। कई थीसिस में सही तरीके से सॉफ्टवेयर ने जांच की थी, लेकिन कितनी नकल करके शोध कार्य हुआ या फिर शोध कार्य में नकल और मौलिकता का कितना प्रतिशत है, अभी यह तय नहीं हुआ है। विवि प्रशासन को यह तय करना है। फिलहाल यही माना जा रहा है कि सॉफ्टवेयर हर न्यूज पेपर से लेकर थीसिस की हकीकत सामने ला देगा। ऐसे में वह बता भी देगा कि कहां से नकल की गई है।

हर साल निकलते हैं 150 से ज्यादा पीएचडी स्कॉलर

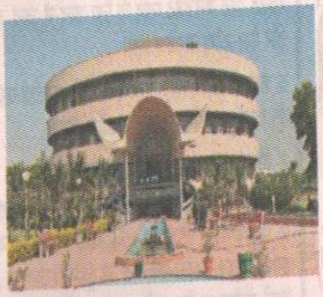

जीजेयू में पीएचडी करवाने वाले शिक्षकों की कमी नहीं है। मौजूदा समय में साढ़े चार सौ के करीब छात्र पीएचडी कर रहे हैं। इनमें से 50 फीसदी से अधिक को एमबीए विभाग करवा रहा है। हर साल 150 से ज्यादा छात्र पीएचडी करते हैं, जिनके शोध की गुणवत्ता को लेकर कोई पैमाना निर्धारित नहीं होता है।

लाइब्रेरी में विशेष सेल में होगी जांच : लाइब्रेरी में थीसिस और न्यूज लेटर आदि की जांच के लिए अलग से सेल का निर्माण किया गया है। इसमें केवल इन्हीं पर फोकस किया जाएगा। यह व्यवस्था विदेशी यूनिवर्सिटी में और देश की कुछ यूनिवर्सिटी में है। हालांकि विवि प्रशासन इस सत्र की ही थीसिस की जांच करवाएगा। इस संबंध में सभी शिक्षकों को विवि की ओर से पत्र जारी कर दिया गया है।

शोध कार्यों में नकल अथवा चोरी (प्लेगरिज्म) को पकड़ने के लिए हमारे पास सॉफ्टवेयर आ गया है, जिससे जल्द ही थीसिस की जांच की जाएगी। सॉफ्टवेयर से शोध कार्यों में नकल को रोका जाएगा। इससे उम्मीद है कि शोध कार्य की गुणवत्ता बढ़ेगी।

-प्रो. एमएस तुरान, रजिस्ट्रार जीजेयू

शोध गंगा से जुड़ी जीजेयू की लाइब्रेरी

हिसार (ब्यूरो)। जीजेयू लाइब्रेरी अब भारत सरकार के तत्वावधान में इनफोर्मेशन पुस्तकालय नेटवर्क के अंतर्गत चलाई गई शोधगंगा परियोजना से जुड़ गई है। शोध गंगा कोष का मुख्य उद्देश्य पुस्तकालयों की थीसिस को कोष में अपलोड कर दिया जाएगा। इससे प्रदेश व विदेश में बैठे छात्र अपनी पढ़ाई व अनुसंधान के लिए प्रयोग में ला सकेंगे। देश के किसी भी कोने में बैठा छात्र व रिसर्च स्कॉलर जीजेयू की रिसर्च थीसिस का लाभ ले सकेगा। विवि के कुलपति डॉ. आरएस शर्मा ने बताया कि भारत सरकार की इस तरह की परियोजना शैक्षणिक जगत में मील का पत्थर साबित होगी। विवि के कुलसचिव प्रो. एमएस तुरान ने बताया कि शोध गंगा कोष विश्वविद्यालय पुस्तकालय व इससे जुड़े सभी शिक्षकों और शोध विद्यार्थियों के लिए एक शैक्षणिक उद्धारक के रूप में नई दिशा प्रदान करेगी।

जीजेयू में कैंसर पर विशेष सेमिनार का आयोजन

हिसार (ब्यूरो)। जीजेयू के फैकल्टी ऑफ फिजिकल साइंसेज द्वारा शुक्रवार को विश्वविद्यालय के ऑडिटोरियम में सेमीनार हाल में कैंसर एंड इट्स मिथ्सज विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। इसमें मुख्य वक्ता एनसी जिंदल इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल केयर एंड रिसर्च, हिसार के डॉ. अरुण अग्रवाल उपस्थित रहे। डा. अरुण अग्रवाल ने कहा कि तंबाकू कैंसर का सबसे बड़ा कारण है। धूम्रपान करने वालों के साथ जो बैठते हैं, उन्हें धूम्रपान करने वालों से ज्यादा हानि होती है। विवि के डीन स्टूडेंट्स वेलफेयर प्रो. कुलदीप बंसल व डीन फैकल्टी ऑफ फिजिकल साइंसेज ने मुख्य वक्ता डॉ. अरुण अग्रवाल को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया।

जीजेयू ने जारी किए परीक्षा परिणाम

हिसार (ब्यूरो)। जीजेयू ने विभिन्न विषयों का शुक्रवार को परीक्षा परिणाम जारी किया। विवि के परीक्षा नियंत्रक सुरेश शर्मा ने बताया कि मई 2015 में आयोजित बीटेक (आईटी) चतुर्थ सेमेस्टर (री अपीयर) बैच 2009 व 2010, बीटेक (प्रिंटिंग) चतुर्थ सेमेस्टर (रीअपीयर) बैच 2010, बीटेक (पैकेजिंग) चतुर्थ सेमेस्टर (रीअपीयर) बैच 2008, 2009 व 2010, बीटेक (पैकेजिंग) पंचम सेमेस्टर (रीअपीयर) बैच 2009 व 2010, बीटेक (प्रिंटिंग) छठा सेमेस्टर (रीअपीयर) बैच 2010, बीटेक (आईटी) आठवां सेमेस्टर (मेन) बैच 2011, दिसंबर 2014 में आयोजित एमटेक (कंप्यूटर साइंस) प्रथम सेमेस्टर (मेन) बैच 2014, बीटेक (कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग) आठवां सेमेस्टर (री अपीयर) बैच 2010, एमटेक (मेकेनिकल इंजीनियरिंग) तृतीय सेमेस्टर (रीअपीयर) बैच 2011, एमटेक (मेकेनिकल इंजीनियरिंग) प्रथम सेमेस्टर (री अपीयर) बैच 2011, एमटेक (मेकेनिकल इंजीनियरिंग) प्रथम सेमेस्टर (मेन) बैच 2014, एमटेक (मेकेनिकल इंजीनियरिंग) प्रथम सेमेस्टर (री अपीयर) बैच 2012 व 2013 तथा बैचलर ऑफ फिजियोथेरेपी तृतीय सेमेस्टर (मेन) बैच 2013 का परीक्षा परिणाम घोषित किया गया।

अमर उजाला 12.9.2015

शोध के लिए चीन जा सकेंगे गुजवि के छात्र

चीन की संस्था के साथ किया करार, अब गुजवि के विद्यार्थियों को मिलेगा विशेष लाभ

जागरण संवाददाता, हिसार : गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को अंतरराष्ट्रीय मानक युक्त शोध व अन्य शैक्षणिक कार्य के लिए अब ज्यादा परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा। इसके लिए विवि प्रशासन ने चीन की संस्था रीड एग्जीबिशंस ग्रेटर चीन के साथ एमओयू साइन किया है। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. आरएस शर्मा तथा रीड एग्जीबिशंस, ग्रेटर चीन के प्रोजक्ट डायरेक्टर एलेक्स वांग ने इस मेमोरेंडम ऑफ अंडरस्टैंडिंग पर हस्ताक्षर किए। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. आरएस शर्मा चीन के डोंगुवान में 16 से 18 सितम्बर को हुई सिनो फोल्डिंग कारटोन 2015 संगोष्ठी में मुख्यातिथि के रूप में भी उपस्थित रहे। उनके साथ प्रिंटिंग विभाग के अध्यक्ष अंजन कुमार बराल भी मौजूद रहे।

डा. आरएस शर्मा ने कहा कि इस एमओयू के बाद विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों व शोधार्थियों को चीन जाकर वहां अध्ययन व शोध करने का मौका मिलेगा। विश्वविद्यालय को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिलेगी। गुजवि नैक से लगातार तीसरी बाद 'ए' ग्रेड प्राप्त करने वाला प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय है। अब वक्त आ गया है कि विवि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी पहचान बनाए। यह मेमोरेंडम ऑफ अंडरस्टैंडिंग इस दिशा में मील का पत्थर साबित होगा।

एमओयू का आदान-प्रदान करते विश्वविद्यालय के कुलपति डा. आरएस शर्मा तथा रीड एग्जीबिशंस, ग्रेटर चीन के प्रोजेक्ट डायरेक्टर एलेक्स वांग।

प्रिंटिंग तकनीक उभरता हुआ क्षेत्र

उन्होंने कहा कि प्रिंटिंग टेक्नोलॉजी का क्षेत्र दुनिया में उभरता हुआ क्षेत्र है। निकट भविष्य में विश्वविद्यालय के विद्यार्थी चीन जाकर वहां पर होने वाले तकनीकी बदलावों से रूबरू हो सकेंगे। विद्यार्थियों को चीन की सभ्यता और संस्कृति को समझने का मौका मिलेगाअंजन कुमार बराल ने संगोष्ठी के दौरान पैकेजिंग डिजाइन पर शोध पत्र प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि प्रिंटिंग के क्षेत्र में रोजगार की अपार संभावनाएं हैं। ऑल इंडिया फेडरेशन ऑफ मास्टर प्रिंटर्स, नई दिल्ली के इन्टरनेशनल रिलेशंस के अध्यक्ष कमल मोहन चोपड़ा ने इस एमओयू को साइन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

समझौते से बढ़ा विवि का गौरव

विश्वविद्यालय के कुलपति ने बताया कि विभिन्न देशों से तालमेल कर शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाई जा रही है। रीड एग्जीबिशनस आने वाले समय में एशिया के अन्य देशों में भी सिनो फोल्डिंग कारटोन जैसे आयोजन करने की योजना बना रहा है। संगोष्ठी के दौरान भी डा. शर्मा ने प्रतिभागियों के समक्ष कहा कि अन्य देशों की प्रिंटिंग टेक्नोलॉजी के मुकाबले भारतीय प्रिंटिंग टेक्नोलॉजी अधिक तेजी से आगे बढ़ रही है। भारत के विभिन्न भागों में लगभग दो लाख 50 हजार प्रिंटर्स कार्य कर रहे हैं। हाल के वर्षों में एक्सपोर्ट प्रिंटिंग के क्षेत्र में भी भारत में काफी बढ़ोतरी हुई है जो भारत के प्रिंटिंग क्षेत्र के लिए शुभ संकेत है। विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. एमएस तुरान ने खुशी व्यक्त की तथा कहा कि इस मेमोरेंडम ऑफ अंडरस्टैंडिंग से विश्वविद्यालय का गौरव बढ़ा है।

दैनिक जागरण 23.9.2015